720
833
H

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1245/7071

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 833

891.431
V 59G

कुंवर ट्रैक्ट माला का ८ वां पुष्प

* बन्देमातरम् *

स्वदेश भजन भास्कर

गान्धी टोपी वालों का जौहर

अर्थात्

स्वराज्य का डंका

IMPERIAL RECORD
RECEIVED
30 MAR 19..
DEPARTMENT

संग्रहकर्त्ता व प्रकाशक—

कुँ० रामसिंह वर्मा

भजनोपदेशक आगरा।

दूसरी बार]   सन् १९३०   [मूल्य)॥

मुद्रक—बाबू सूरजभान गुप्त, केसरी प्रेस, आगरा।

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 833
Date 22-12-71
GOVT. OF INDIA

॥ ओ३म् ॥

स्वराज्य का डंका ।

देश पै क्यों मतवाले हैं ।

कांटे हैं जुबाँ पर अपनी पड़े पावों में झलकते छाले हैं ।
कह सकते नहीं चल सकते नहीं जीने के हमको लाले हैं ॥
कुछ ज़िद है उन्हें, कुछ हठ है उन्हें यह बात तो अच्छी बात नहीं ।
जांचे परखे सोचे समझे हर तरह से देखे भाले हैं ॥ कांटे० ॥
आँखें रखते हो तो देखो दिन रात में कितना अन्तर है ।
भगवान की उन पर कृपा है वह गोरे हैं हम काले हैं ॥ कांटे० ॥
कहने सुनने में रखते हैं हर सूरत को हर सूरत से ।
सांचा उनका क्या सांचा है सांचे में सबको ढाले हैं ॥ कांटे ॥
मस्तों की न पूछो अय 'बिसमिल' बद मस्त है अपनी मस्ती में ।
संसार में हलचल इसकी है हम देश पै क्यों मतवाले हैं ॥कांटे०॥

स्वतन्त्र होकर ।

अधीन होकर बुरा है जीना है मरना अच्छा स्वतन्त्र होकर ।
सरल को तजकर गरल का प्याला है पीना अच्छा स्वतंत्र होकर,
पड़ी हों हाथों में हथकड़ी यदि तो स्वर्ग के सुख से लाभ क्या है ।
नरक में पड़कर निवास निसदिन है करना अच्छा स्वतंत्र होकर ॥
जो दास होकर मिलें भुवन में सुस्वादु भोजन तो तुच्छ है सब ।
सदैव उपवास करके बन बन विचरना अच्छा स्वतंत्र होकर ॥
मिलें उपाधि व मान पदवी, जो सेवा करके तो व्यर्थ है सब ।
घृणा के गड्ढे में पड़के "व्याकुल" उतरना अच्छा स्वतन्त्र होकर ॥

ग़ज़ल ।

दीन भारत का करो कल्याण बन्दे मातरम् ।
कर दया दृष्टि हरो अज्ञान बन्दे मातरम् ॥
कीर्ति है निर्मल तेरी विख्यात सब संसार में ।
कर रहे हैं शेष तव गुणगान बन्दे मातरम् ॥
एक दिन तव पुत्र थे विख्यात अपनी आनमें ।
सह रहे हैं आज कल अपमान बन्दे मातरम् ॥
कर रहे हैं प्रेमयुत सब एक स्वर से प्रार्थना ।
भारतियों की निभा दो शान बन्दे मातरम् ॥
अब करो उद्धार माता बृद्ध भारतवर्ष का ।
हो सदा संसार में सन्तान बन्दे मातरम् ॥
निज चरण की भक्ति दे अरु आत्मबल की शक्ति दे ।
कर सकें तुझ पर निछावर जान बन्देमातरम् ॥
नाश होवे नास्तिकता अरु निरीश्वर बादिता ।
दीन द्विज सरयू धरे तव ध्यान बन्देमातरम् ॥

गाँधी ग़ज़ल ।

मादरे हिंद को है आंख का तारा गांधी ।
चर्ख़ पर क़ौम के पुर नूर सितारा गांधी ॥
हिन्द की बहतरी के वास्ते दर २ फिरकर ।
सख़्तियां झेलीं बहुत कष्ट सहारा गांधी ॥
बच्चे २ का सर क़दमों में गिरा जाता है ।
जान हाज़िर है अगर करदें इशारा गांधी ॥

हर तरफ़ से यही आवाज चली आती है।
हम हैं गांधी के तरफ़दार हमारा गांधी॥

राष्ट्रीय झण्डा।

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा।
झंडा ऊंचा रहे हमारा। टेक॥

सदा शक्ति बरसाने वाला, प्रेम सुधा सरसाने वाला।
वीरों को हर्षाने वाला, मातृ भूमि का तन मन सारा॥ झंडा०॥
स्वतंत्रता के भीषण रण में, लखकर जोश बढ़े क्षण क्षण में।
कांपे शत्रु देखकर मन में, मिट जावे भय संकट सारा॥ झंडा०॥
इस झंडे के नीचे निर्भय, लें स्वराज्य यह अविचल निश्चय॥
बोलो भारत माता की जय, स्वतंत्रता है ध्येय हमारा॥ झंडा०॥
आवो प्यारे वीरो आवो, देश धर्म पर बलि बलि जावो।
एक बार सब मिलकर गाओ, प्यारा भारत देश हमारा॥ झंडा०॥
इसकी शान न जाने पावे, चाहे जान भले ही जावे।
विश्व विजय करके दिखलावे, तब होवे प्रण पूर्ण हमारा॥झंडा॥

स्त्रियों की प्रतिज्ञा।

देश आजाद करके दिखाएंगी हम।
झण्डा विजयी तिरङ्गा उठायेंगी हम॥
देखलो सीता ने रावण के मुकाबिल में कहा।
बाहुबल से ही मैं तेरा गर्व सब दूंगी मिटा॥
ऐसी शक्ति है हम में दिखायेंगी हम॥ देस०॥

दुश्मनों को जंग में दिखलायेंगी कुर्बानियां।
जिस तरह से वीरवर चित्तौड़ की क्षत्राणियां॥
रण में झण्डा तिरङ्गा उठायेंगी हम ॥ देश० ॥
संगठन करके दिखादो वीर कहलाते अगर।
जान जाये शान पर धब्बा न आजाये मगर॥
यही बच्चों को पाठ पढ़ायेंगी हम ॥ देश० ॥

गांधी टोपीवालों का जौहर !

इक लहर चला दी भारत में, इन गांधी टोपी वालों ने।
"स्वाधीन बनो" यह सिखा दिया, इन गांधी टोपी वालों ने॥
सदियों की गुलामी में फंस कर, अपने को भी जो भूल-चुके।
कर दिया सचेत उन्हें अब तो, इन गांधी टोपी वालों ने॥
सर्वस्व देश-हित कर दो तुम, अर्पण सपूत हो माता के।
सर्वस्व-त्याग का मन्त्र दिया, इन गांधी टोपी वालों ने॥
अनहित में भारत-माता के, जो लगे देश-द्रोही बन कर।
उनको सत पथ पर चला दिया, इन गांधी टोपी वालों ने॥
पट बन्द हुये कितने मिल के, लंकाशायर भी चीख़ उठा।
चरखे का चक्र चलाना जब सिखलाया गांधी टोपी वालों ने॥

ग़ज़ल।

किसी को जहां में बनायेगा खद्दर।
किसी को जहां से मिटायेगा खद्दर॥
तरक्क़ी पै जब अपनी आयेगा खद्दर।
तो हर सिम्त जल्वा दिखायेगा खद्दर॥
अदायें कुछ ऐसी दिखायेगा खद्दर।
हसीनों के दिल को लुभायेगा खद्दर॥

हुकूमत ने वे वालों पर कर दिया है ।
मगर अब तो हमको उठायेगा खद्दर ॥
बिदेशी को छोड़ो स्वदेशी को पहनो ।
गुलामी से तुमको छुड़ाएगा खद्दर ॥
पुकारेंगे जब हम प्यारा जवाहर ।
यह गांधी का डंका बजाएगा खद्दर ॥
बहम हिन्दू मुसलिम की रस्खेंबढ़ेंगी ।
यह दोनों को एक कर दिखाएगा खद्दर ॥
रहै डीवन का लट्ठा नहीं नैनसुख है ।
यह मलमल के पुरज़े उड़ाएगा खद्दर ।
बनेगी कभी इसकी एक रोज़ कफनी ।
जगह फ़रके आलम पै पाएगा खद्दर ॥
न डर (नाज़ा) खद्दर पहनने से हरगिज़ा ।
बला बनके तुमको न खायेगा खद्दर ॥

वार्त्ता—भारत माता का सन्देश महात्मा गान्धी द्वारा अपने ३२ करोड़ हिन्दू मुसलमान व अन्य भारतीय जातियों को—

ग़ज़ल ।

मेरे पुत्रों को यह पैग़ाम दे देना ज़रा बेटा ।
मर मिटो देश की ख़ातिर मेरे लख़ते जिगर बेटा ॥
जना करती हैं जिस दिन के लिये औलाद मातायें ।
मेरे शेरों से कह देना कि वह दिन आ गया बेटा ॥
जहां में बुज़दिलों की भांति रोने गिड़गिड़ाने में ।
किसी का हक़ मिला भी है बताओ तो भला बेटा ॥
सुना है सिंहनी एक शेर जनकर सुख से सोती है ।
करोड़ ३२ के होते हुए दुख पा रही बेटा ॥

तुम्हारी शक्ल देखूंगी न हर्गिज़ दूध बख्शूगी ।
निकालोगे न तुम यहां से विदेशी वस्तु को बेटा ॥
रामसिंह जिस्म खाकी ख़ाक में मिलता है मिलने दो ।
करो मत मौत का खटका अमर है आत्मा बेटा ॥

दादरा ।

वार्ता—एक सौभाग्यवती स्त्री की अपने पति से प्रार्थना—

मत लाना चुन्दरिया हमार विदेशी हो बालमा ॥
शैर—है हुकम गांधी का चर्खा चलाइये ।
बुनने के लिये मेरे करघा भी लाइये ॥
करूं देशी पै तन मन निसार ॥ वि० १ ॥
तनज़ेब व मलमल को हर्गिज़ न लाइये ।
मखमल व डोरिये में अग्नि लगाइये ॥
लंका शायर के खावें पछार ॥ वि० २ ॥
कुर्त्ता फतुई मिर्ज़ाई देशी बनाइये ।
बच्चों को कोट पैन्ट न हर्गिज मंगाइये ॥
बचें रोज़ाना सत्तर हज़ार ॥ वि० ३ ॥
ज़ेवर मेरा कर दीजिये गांधी के हवाले ।
जिससे कि वीर हिन्द की इज्ज़त को बचाले ॥
(इन्द्र वर्मा) की है यह पुकार ॥ वि० ४ ॥

माता की पुकार ।

ऐ हिन्द के सपूतो ! कुछ भी तो कर दिखाओ ।
अब भी तजो गुलामी सबको यही सिखाओ ॥
सुनकर हजारों लेक्चर आगे कदम बढ़ाओ ।
कस ही चुके कमर तो फिर पीठ मत दिखाओ ॥
सिर फूट भी चुका हो खाकर पुलिस के डंडे ।
जब होश फिर से आवे झंडे का गीत गाओ ॥
आजाद है जो होना पहला सबक यही है ।
कानून को कुचलकर घर जेल को बनाओ ॥
नक्शा तुम्हें बनाया अंग्रेज ने दगा से ।
बारी तुम्हारी आई उनको जरा नचाओ ॥
वह साइमन कमीशन, यह जांच, वह कमेटी ।
सब हैं फरेब, इनसे फिर भी दगा न खाओ ॥
आँखें जो खुल चुकी हों, तुम जाग जो चुके हो ।
तब आँख मूद कर, बस, गाँधी की जय मनाओ ॥
खादी पहन रहे हो बे खौफ बन रहे हो ।
हिंसा का दाग काला उस पर न तुम लगाओ ॥
जो जुल्म कर रहे हैं होकर तुम्हारे भाई ।
पिस्तोल देशी उन पर बायकाट की चलाओ ॥
कट जाय सर, न कर दो, यह आखरी कसौटी ।
इसका भी वक्त आया, वीरों ! कदम बढ़ाओ ॥

हर प्रकार की पुस्तकें मिलने का पता:—
ज्वालाप्रसाद वर्मा बुकसेलर आगरा